महाकवि कालिदासविरचित रघुवंशम्

प्रथम सर्ग

रघुवंश महाकाव्य की समीक्षा

रघुवंश की कथावस्तु को पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि महाकवि कालिदास पर आदिकवि वाल्मीकि का प्रभाव स्पष्ट है तथापि दोनों में वह अन्तर स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में सूर्यकुल के राजाओं की वंशावली का जो क्रम उल्लखित है, रघुवंश में उसका अक्षरशः अनुकरण नहीं हुआ है, अपितु रामायण से रघुवंश का क्रम भिन्न है। रघुवंश में वर्णित सूर्यकुल के राजाओं की वंशावली का क्रम रामायण की अपेक्षा वायुपुराण तथा विष्णुपुराण में अंकित क्रम से, विशेष रूप में वायुपुराण के क्रम से बहुत मेल खाता है। वास्तव में देखा जाये तो रघुवंश में 19 सर्गों में से केवल सात सर्गों की कथा ही वाल्मीकि-रामायण की कथा के साथ-साथ चलती है। वहां भी हमें दृष्टिकोण का अन्तर स्पष्ट दिखायी देता है क्योंकि रघुवंश में कालिदास वाल्मीकि के समान न तो राम के चरित्र पर अधिक बल देते हैं और न ही वे कथा के इस भाग को सत्य और असत्य अथवा आर्यों तथा अनार्यों (राक्षसों) के मध्य संघर्ष की कथा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। सच पूछा जाये तो कालिदास के काव्य के नायक केवल राम नहीं अपितु राम के पूर्वज, विशेष रूप से दिलीप और रघु भी प्रतीत होते हैं। रघुवंश की रचना में कालिदास का उद्देश्य तुलनात्मक चित्रण प्रस्तुत करना दिखायी देता है। सम्भवतः अग्निवर्ण की कथा द्वारा वे यह बताना चाहते हैं कि उच्च तथा अभिजात वंश में उत्पन्न व्यक्ति भी यदि प्रेम के साथ खिलवाड़ करते हैं तो उनका भी शोचनीय अन्त होता है।

कीथ का विचार है कि रघुवंश में कालिदास की योगदर्शन की ओर विशेष प्रवृत्ति दिखायी देती है क्योंकि उन्होंने योगदर्शन की परिभाषिक शब्दावली जैसे 'धारणा', 'वीरासन' तथा ''समाधि'' का उल्लेख करने के अतिरिक्त अपने काव्य के नायकों को

भी योग द्वारा शरीर परित्याग करते तथा जन्म-बन्धन से मुक्त होते बताया है। उन्होंने योग के द्वारा प्राप्त होने वाली अद्‌भुत शक्तियों का उल्लेख भी किया है जैसे-दरवाजे के बन्द होने पर भी भीतर प्रवेश करने की शक्ति तथा सीता की योग तथा अगले जन्म में अपने पति से पुनर्मिलन की प्राप्ति की कामना आदि।

कल्प-भेद से लीला-भेद एवं पूर्वज संज्ञा-भेद भी सम्भव ही है। सम्भवतः रघुवंशम् महाकाव्य एवं वायुपुराण का आधार का कल्प रहा होगा तथा आदिकवि वाल्मीकि विरचित रामायण महाकाव्य की कथा का आधार भिन्न कल्प रहा हो। कल्पभेद शंका निवारण में प्रभूत सहायक सिद्ध होता है।

भास के प्रतिमा नाटक में भी राम के पूर्वजों का उसी क्रम से वर्णन मिलता है जिस क्रम से रघुवंश में प्रस्तुत किया गया है।

संस्कृत काव्य शास्त्र की दृष्टि से रघुवंश श्रव्य (अर्थात् वह काव्य जो केवल पढ़ा और सुना ही जाता है, नाटक आदि दृश्य काव्य के समान रंगमंच पर नहीं देखा जाता) काव्य है। वह श्लोकों में बंधा प्रबन्ध-काव्य (वह काव्य जिसकी कथावस्तु समग्र एवं अविच्छिन्न चलती है) और संस्कृत के महाकाव्यों की श्रेणी में अग्रगण्य है।

विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में महाकाव्य का निम्नलिखित लक्षण दिया है:

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः ।

सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।।

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ।

श्रृंगारवीरशान्तानामेकोऽंगी रस इष्यते ।।

अंगानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः ।